शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2014

'एक इंच मुस्कान' में नारी मुक्ति के स्वर

डॉ.विनीता चौरसिया
अतिथि विद्वान-शास. नवीन महाविद्यालय,
नौगांव छतरपुर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

'एक इंच मुस्कान' राजेन्द्र यादव एवं मन्नू भंडारी के सहयोगी उपन्यास लेखन का सशक्त एवं सफल प्रयोग है । जिसमें राजेन्द्र यादव द्वारा पुरुष पात्र और मन्नू भंडारी द्वारा स्त्री पात्रों की मानसिक संचरण भूमि का यथार्थ अंकन है। साधारणतः इसमें रंजना, अमर, अमला के परंपरागत त्रिकोणात्मक प्रेम की कथा ही दोहरायी गई है । रंजना उन्मुक्त प्रेयसी व पत्नी के रूप में अतृप्त दिखाई देती है । नारी सुलभ ईर्ष्या व द्वेष उसे अमर के प्रति कर्तव्य निर्वाह से च्युत कर देता है। नारी अपने जीवन में दुःख और अभाव तो सहन कर सकती है पर पति पर स्त्री से प्रेम संबंध अथवा मेलजोल स्वीकार करना उसके वश में नहीं है । अमर की अमला से मित्रता को रंजना वहन नहीं कर पाई है । रंजना की आंतरिक पीड़ा उसे आत्महत्या की ओर प्रेरित करती है । घुटती - मरती रंजना का संत्रास मातृत्व - विहीन नारी की पीड़ा का मार्मिक चित्रांकन, नारी मनोविज्ञान के आधार पर इस उपन्यास में हुआ है ।

कथासार-

अमर' एक निर्विकार तटस्थ उन्मुक्त पुरूष है जो रंजना से विवाह करके न तो उसके प्रति पूर्णतः समर्पित हो पाया है न रंजना ही उसके साथ रहकर पत्नीत्व के अधिकारों की पूर्णता प्राप्त कर सकी है । नारी पुरुष के जीवन में तनाव किसी तीसरे के बीच में उपस्थित होने से उत्पन्न होना स्वाभाविक ही है । चाहे वह पुरुष हो अथवा नारी । रंजना और अमर का मनमुटाव भी अमला को लेकर ही उत्पन्न होता है । अमर आजीवन रंजना के विश्वास को अर्जित नहीं कर पाता है । अंत में रंजना द्वारा त्यागकर चले जाने पर अमर का फूट - फूटकर रोना उसकी असफलता का सूचक है । 'अमला' एकांगी, स्वाभिमानी उन्मुक्त एवं आधुनिक विचार धारा की नारी है जिसने अमर को पथभ्रष्ट किया । रंजना से अमर को छीन लेने में उसका अपना स्वार्थ था । अमला का मैत्रीपूर्ण संबंध अनेक पुरुषों से रहा । किंतु कोई भी उसके जीवन का संबल नहीं बन सका है । मि.चावला , किशोरी मेजर कपूर, कैलाश बाबू, मेहरा साहब और पति बिहारी वह किसी की भी न हो सकी वह अपने जीवन को उन्मुक्त धारा प्रवाह की तरह बहते हुए देखना चाहती थी । अमर, अमला, रंजना तीनों ही अपनी-अपनी परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए दिखाई देते हैं किंतु अन्य पात्रों की तरह परिस्थितियों से भाग खड़े होते हैं । अमर रंजना के प्रेम के बोझ को बहन नहीं कर पाता । अमला और रंजना के पीछे दौड़ने में ही अमर का कलाकार मन चुक जाता है । अन्तरसंघर्षों व मानसिक तनावों से ग्रस्त अमर एकान्त, मायूस, उदास, विरल-सा अकेला ही रह जाता है ।

प्रमुख स्त्री पात्रों का परिचय

एक इंच मुस्कान' में दो स्त्री पात्रों ने प्रमुखता निभाई है - रंजना और अमला । रंजना सुंदर, सुशील व सुशिक्षित नारी है । जो कभी अमर की प्रेयसी थी । अमर के प्रेम में अंधी होकर रंजना अपना परिवार छोड़कर दिल्ली में नौकरी के बहाने आ जाती है । रंजना एक कॉलेज में पढ़ाती है । रंजना के पिता उसके विवाह के लिए अच्छे से अच्छे प्रस्ताव रखते हैं जिन्हें रंजना, अमर को पाने की इच्छा में ठुकराती चली जाती

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2014

है । रंजना , अमर के दोस्त टंडन व मंदाभाभी की सुरक्षा में रहने लगती है। उपन्यास की दूसरी स्त्री पात्र है - अमला । अमला का व्यक्तित्व, बात करने का लहजा, चाल - ढाल सभी कुछ बड़ा आकर्षक है, बड़ा मोहक है । और बड़ी ही विचित्र है इसकी मुस्कान जो इसके अधरों पर फैली इसके लावण्य को इतना अधिक बढ़ा देती है कि मन अनायास ही बँध जाये। पति ने इसे त्यागा और यह पुरुषों के साथ खिलवाड़ करके मानो इसका प्रतिकार ले रही है । अमला कला के प्रति आकर्षित है । स्वार्थपूर्ति हेतु वह अमर को रंजना से छीन लेती है ।

स्त्री की समस्या

उपन्यास की नायिका रंजना की मुख्य समस्या है - अतृप्ति । रंजना विवाहेत्तर समस्या से ग्रसित शारीरिक व मानसिक अतृप्ति से त्रस्त है । रंजना उन्मुक्त प्रेयसी पत्नी के रूप में अतृप्त दिखाई देती है । नारी अपने जीवन में दुःख, वेदना और अभाव तो सहन कर सकती है पर पति पर स्त्री से प्रेम संबंध अथवा मेलजोल स्वीकार करना उसके वश में नहीं है रंजना इस मनोवृत्ति की शिकार है । रंजना के अमर के प्रति प्रेम-समर्पण व त्याग के बदले में उसे केवल एक तनावग्रस्त जिन्दगी ही प्राप्त हुई । रंजना के ही शब्दों में उसकी पीड़ा को आत्मसात किया जा सकता है - "एक बात पूंछू अमर ? तुम्हारी पत्नी बनकर आखिर मैंने ऐसा कौन-सा अपराध कर दिया कि मेरे प्रति तुम्हारा सारा प्यार ही सूख गया ?"1

अमर - अमला की मित्रता रंजना वहन नहीं कर पाई हैं रंजना की आंतरिक पीड़ा उसे आत्महत्या की ओर प्रेरित करती है वह चीत्कार उठती है -"मुझे मार डालो, नहीं तो खुद मर जाऊँगी । पोटेशियम साईनाइट खाकर मार जाऊँगी। इस तरह मुझे जिया नहीं जाता ।"2 एक साधारण नारी की तरह रंजना भी पत्नीत्व के अधिकार को बनाये रखना चाहती है । रंजना एक दिन अमर के साथ समय बिताने के लिए कॉलेज से छुट्टी लेकर आती है। लेकिन घर में घुसते ही पाती है कि श्वेत वस्त्रों में लिपटी एक नारी की हथेलियों में अमर का चेहरा छिपा है । रंजना विस्मय से भर उठती है। रंजना का ध्यान अमला के अधरों पर फैली विचित्र-सी मुस्कान में ही उलझकर रह गया और उसे लगा, कि सामने बैठी यह नारी कुछ रहस्यमयी है । तभी रंजना को अमर का लिखा एक वाक्य याद आया - "ऐसा है उसका व्यक्तित्व कि आदमी एक बार मिल ले तो जिन्दगी भर भूल नहीं सकता ।" विवाह के बाद से एक प्रश्न बराबर उसे मथता रहा था और क्यों इतना खिन्न, उदास और टूटा - सा रहता है । क्यों एक अनबूझ - सी खिलखिलाहट उसे हर समय बेधती रहती है ? आज अचानक ही जैसे रंजना को अपने इन सब प्रश्नों का उत्तर मिल गया और रंजना को लगा अमर के जीवन में वह कितनी व्यर्थ और बेमानी है रंजना अमर को अपना 'सब कुछ' देकर प्रसन्न और सुखी करना चाहती है, पर अमर को उसका 'कुछ भी' नहीं चाहिए। फिर रंजना, अमर - अमला के बारे में सारी सच्चाई जान गई क्योंकि रंजना ने अमर की डायरी पढ़ी तथा अमला के सारे पत्र पढे । यह विश्वासघात मेरे साथ क्यों कर रहे हो? प्यार उससे करोंगे, पर क्योंकि उसे पा नहीं सकते, इसलिए रहोगे मेरे साथ ? "व्यक्ति-व्यक्ति के संबंधों में सबसे अधिक जटिल, नाटकीय और अनिवार्य संबंध स्त्री-पुरुष का आपसी संबंध है।"3

नारी चेतना

विवाह के बाद रंजना -अमर का दाम्पत्य जीवन नीरसता से भर जाता है जबकि रंजना, अमर की पत्नी ही नहीं कभी प्रेयसी भी हुआ करती थी, "याद है, तुमने लिखा था कि रंजना तुम दिल्ली आ जाओ, मेरा मन नहीं लगता ; और मैं माँ-बाप, घर -बार छोड़कर चली आई । तुम्हारी हर इच्छा को मैंने आदेश माना । यदि अमला को लेकर तुम सुखी होना चाहते हो तो मैं स्वयं तुम्हारे जीवन से हट जाऊँगी तुम एक बार । पहले मुँह से कह भर दो कि तुम क्या चाहते हो ।"4

सशक्तिकरण

रंजना ने अमर की छाती में मुँह छिपाकर सिसकते हुए कहा, "मुझे बताओ अमर, कुछ ऐसा बताओ कि मेरे मन से संशय का दंश निकल जाए । पर देखो, मुझे

छलना मत मुझसे झूठ मत बोलना । मैं तुम्हारी हर बात पर विश्वास कर लूँगी , पर किसी दिन भी जाना कि तुम मुझसे झूठ बोले हो, तो उसी दिन चली जाऊँगी ,सचमुच चली जाऊँगी ।"5

स्त्री का शोषण

अमर, रंजना को विश्वास दिलाता हुए कहता है, "हम दोनों मित्र हैं, मात्र मित्र । बहुत खींचों तो हमारी मैत्री को मधुर मैत्री का नाम दे सकती हो, बस । उसका दर्द मुझे छूता है , छूता ही नहीं, व्यथित भी करता है और उसका व्यक्तित्व मुझे बाँधता है । जिस तरह एक लोभी आदमी सोने - चाँदी को देखकर विवेक खो बैठता है, उसी तरह मैं भी उसके सामने विवेक खो बैठता हूँ उसके जीवन का सब कुछ जानने की ललक मेरे विवेक, मेरे संतुलन को मेरे कर्तव्य - बोध निगल जाती है ।"6 "रंजना, अमला से तुम्हें ईर्ष्या नहीं, सहानुभूति होनी चाहिए इतने ऐश्वर्य और वैभव के बीच भी कितनी निर्धन है वह कितनी रिक्त है। उसका दर्द मुझे छूता है। वह ऊपर से हँसती है, मस्त रहती है, पर मन के घाव जो सच्चे स्नेह के अभाव में नासूर बन गए हैं - रात-दिन रिसते रहते हैं, और इस सारी पीड़ा को अपने में ही समेट वह जीती है । उसके पास तो तुम्हारी तरह एक अमर भी नहीं है जिसकी छाती पर सिर पटक - पटककर अपना दुःख , अपना दर्द ही उंडेल सके ।"7

नारी का विद्रोह -

रंजना विद्रोही स्वर में कहती है, "वह तो तुमसे सहानुभूति चाहती है ..पर तुम उससे क्या चाहते हो ? अपने कौन - से दुःख को उसकी हथेलियों में सिर गड़ाकर तुम हल्का कर रहे थे ? मैं क्या समझती नहीं अमर .तुम दोनों का दुःख एक ही है और वह शायद मैं हूँ...दोनों के बीच की दीवार बाधा। मुझे तोड़ क्यों नहीं फेंकते अमर ?... "पुरुष चित्त का लेशमात्र विकार भी नारी शक्ति को कुंठित कर देता है।"8

नारी का शोषण

अमर के पत्नी के प्रति उपेक्षित व्यवहार ने उसका जीना दूभर कर दिया इस घुटन भरे माहौल से रंजना त्रस्त हो गयी तथा अमर को सुखी रहने के लिए वह घर छोड़ने का फैसला कर लेती है । तथा अमर को एक पत्र लिखती है। पत्र पढ़ लेने के बाद अमर पर इसकी कोई प्रतिक्रिया नहीं होती जिससे अब इस घर में रहना रंजना अपना अपमान समझती है । अमर ने उसका बँधा हुआ सामान देखकर भी कुछ नहीं पूछा था, केवल इतना ही कहा - "तुम्हें स्टेशन तक छोड़ आता हूँ।"9

नारी चेतना

अपमान का यह दंश मुझे जीवन भर सालता रहेगा । इतना मान तो हम शत्रु का भी रख लेते हैं । स्वाभिमानी रंजना पति के घर छोड़ने के बाद माँ-बाप के घर नहीं जाती है क्योंकि इसी पति के लिए उसने एक बार माँ-बाप का घर छोड़ा था । रंजना अपनी सहेली मीरा के यहाँ पहुँचती है । वहाँ एक दो पत्रों का आदान - प्रदान रंजना अमर के बीच होता है । रंजना मंदा भाभी को एक पत्र लिखती है - अमर को अमला के प्रभाव से बचाइए । उसकी साधना और उसके सुख के लिए मैं घर छोड़ आई, पर अब चाहती हूँ वह कुछ बने, कुछ लिखे । नहीं तो मेरे प्यार की तरह मेरा त्याग भी निरर्थक हो जाएगा । मीरा, अमर को पत्र द्वारा सूचित करती है कि रंजना की तबीयत बहुत खराब है । जिससे अमर पहुँचता है पर रंजना के माँ बनने की खबर मिलने पर वह कहता है - "मैं सोचता हूँ , डॉक्टर से ही कह दिया जाय कि अभी हम इस सबके लिए तैयार नहीं है । वह अपने आप कोई रास्ता सुझा देंगी । बस, कुछ खर्च की व्यवस्था करनी होगी, सो मैं कर लूँगा ।" रंजना अमर की बात सुनकर सन्न रह जाती उसके आँसुओं में बोलने की शक्ति होती तो व यही कहती, "कौन कहता है मैं बच्चा नहीं माँगती, मैं बच्चा नहीं चाहती ? मैं चाहती हूँ , पर मैं बहुत - बहुत मजबूर हूँ ।" रंजना - अमर को जोड़ने में बच्चा एक सेतु बनकर आया लेकिन अमर की क्रूरता ने उस सेतु को ही तोड़ दिया, और रंजना का जीवन नीरस, शुष्क, अवसाद पूर्ण रह गया । यह कैसा करुण कृंदन

है, यह कैसी चीत्कार है गर्भावस्था में ही ममता का मर्माहत संस्कार है।

निष्कर्ष

'एक इंच मुस्कान' का नायक 'अमर' एक प्रेमी अवश्य है किंतु जीवन में उसे जबरदस्त असफलता का सामना करना पड़ता है । 'अमला' की मुस्कान के जादू में बँधा अमर न एक सफल पति बन पाया है । न सफल प्रेमी। अमर की दृष्टि में रंजना का प्रेम उसके कलाकार व्यक्तित्व को पनपने नहीं देता । यह धारणा गलत है । विवाहोपरांत नारी पति पर एकाधिकार चाहती है वह उसे किसी स्त्री के साथ मैत्रीपूर्ण संबंधों की छूट नहीं दे सकती, किंतु इसका अर्थ यह नहीं कि यदि पति अपने वैयक्तिक क्षेत्र में विकास करना चाहता है तो पत्नी उसे रोकती हैं यदि अमर उपन्यास ही लिखना चाहता था तो क्या रंजना को छोड़कर अमला ही उसकी प्रेरणा बन सकती थी ? अमर, रंजना के अतिशय प्रेम को क्यों नहीं स्वीकार कर पाया ? पुरुष 'दाम्पत्य प्रेम' को केवल बंधन ही क्यों मानता है ? क्या पत्नी का प्रेम 'पुरुष' की सफलता की आधारशिला नहीं बन सकता ? यदि अमर परंपरावादी प्रेम को मान्यता न देकर स्वेच्छाचार ही करना चाहता है तो इसके लिए कोई रोक-टोक नहीं हैं । फिर पति (पुरुष) को भी पत्नी (नारी) को यह छूट देनी ही होगी कि वह भी जैसा चाहे वैसा व्यवहार करने के लिए आजाद है । किंतु ऐसा करने से समाज किसी आदर्श पर केन्द्रित नहीं हो सकेगा । परिणाम यह होता है कि अमर जैसे पुरुष न तो उत्तम गृहस्थ बन पाते हैं। न सफल प्रेमी ही । दोनों में द्वन्द्व (पति व प्रेमी रूप में) निरंतर चलता ही रहता है ।

संदर्भ

1. एक इंच मुस्कान-राजेन्द्र यादव व मन्नू भंडारी पृ.156
2. वही पृ.154
3. कहानी स्वप्न और संवेदना- राजेन्द्र यादव पृ.207
4. एक इंच मुस्कान-राजेन्द्र यादव व मन्नू भंडारी पृ.157
5. वही पृ.155
6. वही पृ.156
7. वही पृ.155
8. चारुचंद्र लेख-आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी पृ.171
9. एक इंच मुस्कान-राजेन्द्र यादव व मन्नू भंडारी पृ.167